

## धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान एवं पुरस्कारों की स्थापना

### चर्चा में क्यों?

7 मार्च, 2023 को मध्य प्रदेश की संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री ऊषा ठाकुर ने बताया कि प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा स्वराज संस्थान संचालनालय के अधीन धर्मपाल शोधपीठ के अंतर्गत 5 लाख रुपए का एक धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान एवं दो-दो लाख प्रति पुरस्कार के तीन धर्मपाल राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित किये जा रहे हैं।

### प्रमुख बंदि

- उल्लेखनीय है कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत वखियात चतिक, इतहिसकार एवं वचिरक धर्मपाल के जन्म शताब्दी वर्ष पर यह नरिणय लयिा गया है।
- प्रदेश की संस्कृति, पर्यटन और धर्मस्व मंत्री ऊषा ठाकुर ने बताया कि धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान में भारतीय इतहिस, शकिषा एवं धर्मपाल के वचिरों के प्रतिपादन के लयिे कयिे गए उल्लेखनीय कार्य एवं योगदान हेतु वयक्त/संस्था को सम्मानति कयिा जाएगा।
- इसके अलावा आधुनकि भारत के राजनीतिक, सामाजकि और आर्थकि इतहिस पर मौलकि कार्य, ऐतहिसकि दस्तावेज़ों के संरक्षण, पररिक्षण, दस्तावेज़ीकरण, अनुवाद, प्रचार-प्रसार और ग्राम स्वराज, ग्रामीण वकिस, सामाजकि सरोकार एवं स्वदेशी जैसे भारतीय वचिरों के करयिान्वयन के क्षेत्र में सकरयिे वयक्तयिों एवं संस्थाओं को धर्मपाल राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत कयिा जा सकेगा।
- ऊषा ठाकुर ने बताया कि वर्ष 2022-23 में 6 लाख रुपए की 5 सीनयिर फैलोशिपि तथा 4 लाख 32 हज़ार रुपए की सात जूनयिर फैलोशिपि भी घोषति की गई है।
- पाँच सीनयिर फैलोशिपि के लयिे आमंत्रति प्रस्तावों में 18वीं शताब्दी का भारत, भारत और यूरोप, भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की ऐतहिसकिता, भारतीय परंपरा में समाज और राज-व्यवस्था, औपनविशकिता से मुक्ति और भारतीय स्वतंत्र, भारतवर्ष की सामाजकि संरचना, अंतरसंबंध और सामुदायकि संस्कृतयिों, भारत की पंचायती व्यवस्था का इतहिस, भारत की जनपदीय शकिषा प्रणाली, पशुचारक-संस्कृति (गोधन संस्कृति) और भारतीय अर्थतंत्र, घुमंतु (वमुक्ति एवं अरद्ध घुमंतु) समुदायों की जीवन-संस्कृति आदि विषय शामिल हैं।
- सात जूनयिर फैलोशिपि के लयिे आमंत्रति प्रस्तावों में मध्य भारत की स्थानकि गाथा-आख्यान परंपराएँ और वाचकि इतहिस, मध्य भारत में वज्जान और तकनीकी कौशल परंपराएँ, मध्य भारत का भाषा परिवार और उनकी पहचान, मध्य भारत में जातीय कौशल: कला, शलिप, वज्जान, मध्य भारत में स्थानीय औषधीय व वैद्यकीय ज्जान परंपरा, मध्य भारत की देशज भैषज्य ज्जान संपदा, राष्ट्र-नरिमाण में घुमंतु समुदायों का अवदान, मध्य भारत की अरण्यक जीवन-संस्कृति एवं धरोहर आदि विषय शामिल कयिे गए हैं।